



दुधारू पशुओं में थनैला रोग

रितु पंधाल*, दीपिका श्योराण*, काटे ऋजुता राजेश** और प्रवीन कुमार*

॥ थनैला, मादा पशुओं में कई कारणवश से फैलने वाला थनों का संक्रामक रोग है। यह रोग सभी प्रकार के दुधारू पशुओं को समान रूप से प्रभावित करता है। यह कई प्रकार के जीवाणु, विषाणु, फफूंद इत्यादि से होता है। रोग का प्रसारण संक्रमित पानी, बिछावन, उपयोग में आने वाले उपकरण तथा दूध दुहने वाले के हाथों से हो सकता है। ॥

यह रोग तीव्र, दीर्घकालिक या लक्षणहीन अवस्था में हो सकता है। थनैला रोगग्रस्त कुछ पशुओं के थन सामान्य प्रतीत होते हैं पर इनके दूध में बदलाव देखा जा सकता है। कुछ पशुओं में असामान्य दूध के साथ थनों में सूजन, लालिमा, दर्द एवं गर्मी देखी जाती है। समय पर इलाज न होने पर थन लकड़ी की तरह सख्त हो जाते हैं एवं इनसे दूध आना बंद हो जाता है। शुरूआत में यह रोग एक या दो थनों को प्रभावित करता है, परंतु बाद में यह अन्य थनों में भी फैल सकता है। पशु खाना-पीना छोड़ देता है व दूध की मात्रा में निरंतर कमी हो जाती है। कभी-कभी रोगी पशु ज्वर से प्रभावित होता है। यह रोग दूध की गुणवत्ता तथा स्वाद को प्रभावित करता है जैसे-दूध में छिछड़े या रक्त आदि का आना, रंग में बदलाव होना, गाढ़ा व नमकीन होना, पी-एच का बढ़ कर 7.4 होना।

*पशु सूक्ष्मजीवी विज्ञान विभाग, लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा); **पशु आनुवंशिकी और प्रजनन विभाग, महाराष्ट्र पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, नागपुर (महाराष्ट्र)

जांच व पहचान

- रोग के लक्षणों द्वारा थनों में होने वाले कड़पन या सख्ती की जांच के लिए, दूध निकालने के बाद थनों को दोनों हाथ की हथेलियों से दबाकर देखना



थनैला रोग की जांच

चाहिए, कहीं कोई गांठ तो नहीं बन गई है।

- दूध की पहली धार काले कपड़े या काले कागज पर डालकर, दूध में छिछड़े आदि का आना या रंग में बदलाव होना देखा जा सकता है।
- डिटर्जेंट पाउडर का पानी में घोल (3 ग्राम प्रति 100 मि.ली. पानी में) बना लें। यह थोड़ा सा घोल (5 मि.ली.) लेकर इसमें समान मात्रा (5 मि.ली.) में दूध मिलाएं, हिलाएं एवं मिश्रण को जांचें। यदि पशु थनैला रोग से प्रभावित होगा, तो मिश्रण जेली जैसा गाढ़ा हो जाता है। इस प्रकार रोग का निदान घर पर ही किया जा सकता है एवं बाद में पुख्ता जांच प्रयोगशाला में अवश्य करवाएं।
- रोग की पुख्ता जांच व उपचार जानने के लिए दूध के नमूने प्रयोगशाला में परीक्षण के लिए दिए जा सकते हैं।
- पशुओं से दूध के नमूने लेने की सही विधि में थनों को सबसे पहले अच्छी तरह से धो लें व सुखा लें। प्रत्येक थन से दूध की पहली 1-4 धार छोड़कर अगली कुछ धारों को अलग-अलग साफ शीशी या नई सीरिंज में लें एवं उन पर थनों की पहचान लिखें। इन नमूनों को जल्द से जल्द प्रयोगशाला में परीक्षण के लिए दिया जाना चाहिए, जिसके लिए गर्मियों में बर्फयुक्त थर्मस का प्रयोग होना चाहिए।

रोकथाम

दूध व्यवसायी पशुपालकों के लिए थनैला रोग एक चुनौती एवं चिंता का विषय बना हुआ है, जो प्रतिवर्ष करोड़ों रुपयों के नुकसान का कारण है। इसलिए इसका प्रबंधन और समय पर उपचार करना अति आवश्यक है। थनैला रोग से बचाव के लिए निम्न कुछ बातें हैं, जिनका पालन किया जाना चाहिए:

- थनैला रोग के लक्षण दिखने पर प्रभावित पशुओं को अन्य पशुओं से तुरंत अलग करना चाहिए एवं पशु चिकित्सक से परामर्श कर उपचार करवाना चाहिए।



रोगग्रस्त थन

घरेलू व देसी उपचार

- थनैला के लक्षण दिखने पर नीचे दी गई घरेलू व देसी उपचार की सूची में से किसी भी उपाय को प्रयोग में लेने से पहले पशु चिकित्सक से सलाह अवश्य लेनी चाहिए।
- थनों की सूजन कम करने के लिए नीम की पत्तियों का उबला हुआ पानी गुनगुना होने के बाद इससे सिकाई करें या बर्फ से मालिश करें।
- शीशम की पत्तियों व हल्दी का लेप बनाकर थनों पर लगाने से आराम मिलता है।
- ग्वारपाठा (250 ग्राम गूदा), हल्दी (50 ग्राम) एवं चूना (10 ग्राम) को पीसकर पेस्ट बनाने के बाद, इसे 8 हिस्सों में बराबर बांटकर दिन में 8 बार थनों को अच्छे से धोने व दूध निकालने के बाद थोड़े से पानी में मिलाकर थनों पर 5 से 7 दिनों तक लेप किया जा सकता है।
- तिल का तेल, हल्दी एवं लहसुन का मिश्रण भी प्रभावित थनों पर उपयोग किया जा सकता है।
- देसी घी/तिल या सरसों का तेल (250 ग्राम), 250 ग्राम नीबू का रस, सफेद जीरा (50 ग्राम) व देसी खांड (250 ग्राम) का घोल रोगी पशुओं को सुबह के समय 5 से 7 दिनों तक पिलाया जा सकता है। इसके साथ मीठा सोडा (50 ग्राम) पानी में मिलाकर भी पशु को पिलाना चाहिए।

- समय-समय पर थनैला रोग के लिए पशुओं के दूध की नियमित रूप से घर में जांच करते रहना चाहिए व रोग की पुष्टि के लिए प्रयोगशाला में दूध के नमूनों को भेजना चाहिए।
- दूध के नमूनों की बिना प्रयोगशाला में जांच कराएं उपचार करवाना, सही नहीं है।
- स्वस्थ पशुओं का दूध पहले निकालना चाहिए एवं संक्रमित पशुओं का बाद में। अगर उचित हो, तो दोनों प्रकार के पशुओं का दूध निकालने वाले व्यक्ति भी अलग-अलग रखे जा सकते हैं।
- थन के छोटे से घाव को भी नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि तुरंत उसका उपचार करवाना चाहिए।
- प्रसव के बाद पशुओं को नरम बिस्तर प्रदान किया जाना चाहिए।
- दूध की धार को कभी भी फर्श पर न मारें।
- दूध दुहने की तकनीक उचित होनी चाहिए (दूध निकालते समय अंगूठे का प्रयोग न करें) एवं दुधारू पशुओं के खुर भी नियमित रूप से काटे जाने चाहिए, जिससे पशुओं के थनों को किसी प्रकार की चोट न पहुंचे।
- दूध दुहने वाले व्यक्ति को दूध निकालने से पहले एवं बाद में अच्छी तरह से अपने हाथ धोने चाहिए। स्वच्छ वस्त्र तथा जूते पहनने चाहिए अथवा उनके हाथों के नाखून भी लंबे नहीं होने चाहिए। दूध निकालते समय उन्हें चुप रहना चाहिए, खांसना एवं थूकना भी नहीं चाहिए।
- सभी पशुओं को हमेशा ताजा एवं संतुलित आहार तथा साफ पानी देना चाहिए।
- दूध निकालने से पहले एवं बाद में सभी पशुओं के थनों को अच्छी तरह साफ पानी से धोना चाहिए तथा सूखे कपड़े से पोछना चाहिए।
- दूध निकालने के बाद थन का छेद आधे से चार घंटों तक खुला रहता है, जिससे हानिकारक जीवाणु आसानी से थनों के अंदर प्रवेश कर सकते हैं। एवं थनैला का कारण बन सकते हैं। इसलिए दूध निकालने के बाद पशुओं के चारों थनों को एंटीसेप्टिक घोल (1 प्रतिशत लाल दवाई/पोटेशियम परमैंगेट, 0.5 प्रतिशत क्लोरहेक्सिडीन) में कुछ सेकेंड के लिए डुबोना चाहिए। इसके साथ ही साथ दूध निकालने के तुरंत बाद पशुओं को चारा देना चाहिए, जिससे वे कम से कम आधे घंटे तक फर्श पर न बैठें।
- पशुघर के फर्श को सूखा रखें तथा दूध निकालने से पहले एवं बाद में इसकी अच्छी तरह से सफाई करें। फिनायल या चूने के घोल का प्रयोग किया जा सकता है।
- दूध जल्द से जल्द एवं एक ही बार में बिना रुकावट के निकालना चाहिए।
- दूध के बर्तन एवं दूध निकालने की मशीन को गरम पानी से अच्छी तरह साफ करना चाहिए।
- लंबे समय से संक्रमित पशुओं को झुंड से हटा देना चाहिए।